



# शालू की गुदाई-1

“दोस्तो, आपने मेरी पिछली कहानी केले का भोज को तहेदिल से पसंद किया। शुक्रिया। उससे पहले स्वीटी या जूली, पुष्पा का पुष्प आदि कहानियों ने भी आपका भरपूर मनोरंजन किया। आपने उसकी भाषा की स्तरीयता और कल्पनाशीलता की प्रशंसा की। आपसे मिली प्रतिक्रियाओं ने मेरा उत्साह बढ़ाया है। अब मैं अगली कहानी लेकर आपके सामने [...] ...”

**Story By: (happy123soul)**

**Posted: Wednesday, August 11th, 2010**

**Categories: [चुदाई की कहानी](#)**

**Online version: [शालू की गुदाई-1](#)**

# शालू की गुदाई-1

दोस्तो, आपने मेरी पिछली कहानी

केले का भोज

को तहेदिल से पसंद किया।

शुक्रिया।

उससे पहले स्वीटी या जूली, पुष्पा का पुष्प आदि कहानियों ने भी आपका भरपूर मनोरंजन किया। आपने उसकी भाषा की स्तरीयता और कल्पनाशीलता की प्रशंसा की। आपसे मिली प्रतिक्रियाओं ने मेरा उत्साह बढ़ाया है।

अब मैं अगली कहानी लेकर आपके सामने उपस्थित हूँ। वैसी ही परिष्कृत भाषा में और भरपूर यौन सनसनी और रोमांच के साथ।

आपका

लीलाधर

दोस्तो, मुझे अगली कहानी लेकर आने में कुछ ज्यादा वक्त लग गया। इसकी वजह है मेरी पत्नी, शालू। वो मेरी जान है। शादी के बाद से ही मैं उस पर जो फिदा हुआ, सो आज तक हूँ।

‘देखे तो देखता रह जाए !’ जैसी सुंदर और सेक्स में सदा ही नए उत्साही प्रयोग करना एंजॉय करती है। मेरी रंगीन फंतासियों को सच करने में मेरा साथ देती है। कभी मैंने उसे पार्क में पेड़ के पीछे उसके वक्ष अनावृत करके उसके स्तन चूसे, कभी उसके हाथ-पांव बांधकर उसके साथ सेक्स किया।

एक बार तो झील में नहाते हुए मैंने पानी के अंदर ही उसके सारे कपड़े उतार कर ले लिए और उन्हें किनारे पर ही फैलाकर रख दिया था कि कोई देखे तो समझ ले कि पानी के भीतर

वह नंगी है।

मैं सूखे कपड़े थोड़ी दूर पर पेड़ की एक डाल में टांगकर चला गया था। बड़ी मुश्किल से वह पानी से निकलकर उस पेड़ तक जा पाई थी। मैं छिपकर पानी से प्रकट होते उसके नग्न सौंदर्य का पान करता रहा।

उस वक्त मुझे जो उसने मुझे जो डांट पिलाई सो पिलाई, रात में भरपूर बदला लिया।

दिल्ली से चंडीगढ़ हाइवे पर कार में अपनी ड्राइविंग सीट के बगल में बिठाकर उसके ब्लाउज के पल्ले खोल दिए थे और उसकी तरफ की खिड़की खोल दी थी। उसके ब्लाउज के पल्ले उड़ उड़कर लहरा रहे थे और ठंडी हवा से उसके स्तन और चूचुक कड़क हो गए थे। उस दिन सड़क पर कितनी ही दुर्घटनाएँ होते होते बचीं।

पहला बच्चा होने के बाद भी बिस्तर पर हमारे जोशोखरोश में कोई कमी नहीं हुई, लगता था 'वन इज फन'। हमारी दीवानगी देखकर दूसरे ईर्ष्या करते तो हम अपने को खुशनसीब समझते। लेकिन दूसरा बच्चा होने के बाद लगने लगा था कि अब पहले वाला रस और रोमांच नहीं रहा। दस साल के वैवाहिक जीवन ने उसमें एकरसता घोलनी शुरू कर दी थी और यही हम दोनों को बेहद अखर रहा था।

पति मैं हूँ, इसलिए कुछ उपाय करने की जिम्मेदारी मेरी थी। किसी दूसरे दम्पति से अदला-बदली की इच्छा मन में थी, मगर किसी दूसरी औरत के सहारे अपनी पत्नी में उत्तेजना ढूँढना सही नहीं लग रहा था। मुझे अपनी पत्नी में ही वो खूबी चाहिए थी। मैं बराबर सोच रहा था कि ऐसा क्या करूँ कि शादी के समय वाला चटखारा फिर से वापस आ जाए, शालू में फिर से वही हसीन, नमकीन, मस्ती का रंग फिर से भर जाए।

उसका एक पुराना शौक था, गुदने यानि टैटू का ! वह शादी के बाद ही चाहती रही थी कि

शादी की याद में उसकी काया के किसी अति व्यक्तिगत जगह में एक गुदना हो पर मैं उसके गोरे बेदाग शरीर पर फिदा था। उस पर कितना भी अच्छा गुदना क्यों न हो मुझे धब्बा-सा ही लगता।

वह फिगर को लेकर वह बहुत संवेदनशील थी। प्रसव के बाद उसने मेरी मां की पारंपरिक घी में लिपटी बत्तीस जड़ी-बूटियों की दवाइयाँ खाने से इनकार कर डॉक्टर की सलाह के मुताबिक खीरे सलाद और प्रोटीन-प्रचुर दालें खाकर पेट पर चरबी की परत चढ़ने नहीं दी थी। दो प्रसवों के बाद भी उसका शरीर कसा और सुंदर था।

मैंने सोचा कि उसकी इसी इच्छा से जिंदगी में हरियाली लाई जाए। विवाह की अगली वर्षगांठ पर, जो जल्दी ही आने वाली थी...

सुनकर वह उछल पड़ी। शादी की सालगिरह का अनुपम तोहफा होगा। अंदर के अंग पर एक सुंदर-सा गुदना ! और वह पैंटी से भी छिपा रहेगा।

केवल हम दोनों ही उसे देख सकेंगे। निस्संकोच होने के बावजूद उसके गालों पर लाली दौड़ गई। लेकिन गुदना करने वाली उसके गुप्तांग को देखेगी तो ? इस पर मेरी अगली शर्त ने उसे और लाल कर दिया, 'ऐतराज नहीं करना कि कोई दूसरा मर्द तुम्हें देख लेगा।'

उसकी हैरानी भरे 'क्या ??!' में खुले मुँह को मैंने हाथ से दबा दिया और किसी औरत से करवाने की संभावना से दृढ़ता से इनकार कर दिया।

इस बीच मैंने दिल्ली में कोई अच्छी मनोनुकूल टैटू शॉप की तलाश की। बड़ी कंपनियों के सैलून भव्य और तरह तरह के उपकरणों से सज्जित थे मगर वहाँ मेरे मन लायक बात नहीं थी। मैं किसी अच्छे अकेले युवा प्रोफेशनल आर्टिस्ट से कराना चाहता था। रॉबर्ट में मुझे ये सभी खूबियाँ मिल गईं। अमरीकी था, पर भारत के प्रति किसी रौमैटिक आकर्षण में

बंधकर यहीं रह गया था। डॉक्टरी पढ़ा था, गाइनी सर्जन था पर मेडिकल प्रैक्टिस करके बीमार औरतों को देखना उसे गवारा नहीं हुआ। उसकी जगह स्वस्थ और सुंदर इंडियन वूमन की 'असली' ब्यूटी देखने के लिए उसने यहाँ टैटूइंग और पियर्सिंग (गुदना गुदाई और छिदाई) की दुकान खोल ली थी।

कैसे कैसे सनकी लोग होते हैं !

अंग्रेजों की प्रवृत्ति के अनुरूप उसकी दुकान बिल्कुल प्रोफेशनल तरीके से स्वच्छ, हाइजीनिक और आधुनिक उपकरणों से लैस थी। मैंने उसके साथ तय कर लिया। उसने सुझाया कि टैटूइंग के साथ 'क्लिट पियर्सिंग (भगनासा की छिदाई) भी करा दूँ।

'It will add much more spice !' गुदने की ब्यूटी तो रोशनी में ही दिखेगी पर क्लिट में छिदे रिग का आनन्द तो अंधेरे में भी मिलेगा।

मैंने पूछा- चाटते समय जीभ में गड़ेगा नहीं ?

वह हँसा- उलटे जीभ से उसकी टकराहट तुम्हारी वाइफ को और मस्त कर देगी। अंधेरे में क्लिट को खोजना नहीं पड़ेगा।

उसने बताया कि कई ललनाएँ उससे क्लिट पियर्सिंग करवा चुकी हैं, वे बहुत खुश हैं।

मैंने उसे बता दिया कि सारी प्रक्रिया के दौरान मैं मौजूद रहूँगा और वीडियो कैमरे में टेप करता रहूँगा।

जब मैंने शालू को उसकी क्लिट की छिदाई के बारे में बताया तो वह बोल पड़ी- बाप रे ! कितना दर्द होगा !

मैंने प्यार से उसको मनाया- कुछ दर्द नहीं होगा, और मैं तो तुम्हारे पास मौजूद रहूँगा। यह

कहानी आप अन्तर्वासना पर पढ़ रहे हैं।

‘कितनी शरम आएगी !’

मैंने उसके झुके माथे को चूम लिया- एक बार जब उसके सामने टांगें खोल चुकी होगी तो शर्मने को क्या बाकी रह जाएगा ?

उस रात उसकी सांसों में फूलों की खुशबू और योनि में खटमिट्ठे शराब का स्वाद था।

अगले दस दिन रोमांच में ही गुजरे। लग रहा था काम-सुख की बगिया में फिर से बसंत आया है।

21 मई का बेसब्री से प्रतीक्षित दिन ! हमारी शादी की सालगिरह ! शालू को उसका तोहफा देने का दिन !

मैंने एक दिन पहले ही उसकी काम-वेदी का मुंडन कर दिया ताकि अगले दिन तक उस पर से रेजर की जलन चली जाए। उस दिन बच्चों के जगने के पहले सुबह मुँह अंधेरे ही उठा और पानी गर्म किया। शालू अभी आधी नींद में ही थी। उसकी गोरी जांघें और बीच में उभरी मक्खन मलाई चूत को देखकर मेरा मन डोलने लगा। मैंने उसके चूतड़ों के नीचे एक प्लास्टिक शीट डाली और गरम पानी में छोटा सा तौलिया भिगोकर काम-वेदी पर फैला दिया।

पाँच मिनट में बाल अंदर जड़ तक मुलायम हो गए। चूत पर उदारता से शेविंग क्रीम लगाकर ब्रश से झाग उत्पन्न किया और लेडीज रेजर से उसको हौले-हौले मुंडना शुरू किया। उसकी नींद खुल गई थी और वह सिर के नीचे तकिया ऊँचा करके देख रही थी। गाढ़ा सफेद झाग तिकोने उभार पर पेड़ू से लेकर नीचे गुदा तक फैला था। गोरे रंग के बीच उभरी सफेद चूत सुपरिभाषित तथा सुविकसित लग रही थी।

मैंने होंठों के अगल बगल के बालों को साफ करने के लिए उनके बीच उंगली डालकर होंठों को अलग कर सावधानी से रेजर चलाया।

उत्तेजना से उसके रोएँ खड़े हो गए थे। जब मुंडन समाप्त हुआ और मैंने तौलिये से उसे पोंछा, जिसमें उसकी भगनासा पर भी जानबूझ कर बहकी हुई रगड़ दे दी, तब तक वह अपने ही रसों से लबलबा रही थी, पूरी चूत गर्म होकर फूल गई थी।

मैंने उस पर आफ्टरशेव लोशन लगाया तो वह एकबारगी हजार सुइयों की चुभन से थरथरा गई।

उसने मुझसे जल्दी से एक संभोग की मांग की, पर मैंने याद दिलाया कि टेटू शॉप में चूती हुई योनि लेकर जाना ठीक नहीं होगा।

दिन भर ऑफिस में मन चंचल, उत्तेजित रहा। शालू से ज्यादा सनसनी और उत्सुकता मुझे थी। रात को हम बस किसी तरह एक-दूसरे में समाने से खुद को रोक पाए। हमने हाथों से भी संतुष्टि लेने से मना कर दिया। लेट द एकसाइटमेंट बिल्ड अप।

अगले दिन... दो बजे का एपाइंटमेंट था। सुबह हेयर रिमूविंग का आखिरी सेशन, ताकि बालों की खूंटियाँ अंदर तक गल जाएँ। मैंने मुंडित क्षेत्र पर पर हेयर रिमूविंग क्रीम लगाकर आधे घंटे के लिये छोड़ दिया। गुदा के पास जहाँ रेजर नहीं चल पाया था वहाँ उदारता से ढेर-सा क्रीम लपेटते हुए मुझे कौतुक भरी खुशी हुई- आज इसका भी बेड़ा पार होगा क्या? हालाँकि मैं गुदा मैथुन का प्रेमी नहीं था।

जब मैंने क्रीम पोंछकर तौलिये से साफ किया तो उसकी चूत छोटी बच्ची की तरह भोली ओर चुलबुली लग रही थी। एकदम मालपुए की तरह मुलायम और फूली। बीच में चिरती माँस, उसके शीर्ष पर तनी हुई भगनासा... जैसे कुमारी लड़की की तरह घमंड में हो और छूने पर गुस्सा कर रही हो।

मैंने कहा- बस आज तुम्हारी अकड़ का अंतिम दिन है। आज मैं नथ पहनाकर तुम्हें सदा के

लिए सुहागन बना लूंगा।

मैंने कैमरा निकाला और उस यादगार दृश्य की तसवीरें ले लीं।

दोपहर दो बजे का अपाइंटमेंट था। एक बजते-बजते वह नहा-धोकर तैयार हो गई।

‘क्या पहनकर जाना ठीक रहेगा?’

मैंने सुझाया कि शलवार-फ्रॉक या शर्ट-पैंट पहनकर मत जाओ, शलवार या पैंट उतारने में नंगापन महसूस होगा। क्यों न पहले से ही थोड़ा ‘खुला’ रखा जाए। मैंने सुझाया कि बिना पैंटी के शॉर्ट स्कर्ट पहन लो।

उसे लगा मैं मजाक कर रहा हूँ और वह बिगड़ पड़ी। उसने पतली शिफॉन की साड़ी पहनने का फैसला किया। मेरी बात मानते हुए उसने अंदर पैंटी नहीं पहनी, बोली, ‘जरूरत पड़ी तो साड़ी उतार दूंगी, केवल साए में कराने में कोई दिक्कत तो नहीं है ना?’

औरत की जिद ! उसका अपना तर्क !

happy123soul@yahoo.com

कहानी का अगला भाग : [शालू की गुदाई-2](#)



## Other stories you may be interested in

### भाभी की चूत चुदाई होटल में की

हॉट MILF सेक्स कहानी मेरी चचेरी भाभी की चूत चुदाई की है. वो बहुत सेक्सी देसी माल है. बच्चा होने के बाद उनका बदन और सेक्सी हो गया था. दोस्तो, मेरा नाम सूरज है. मैं उत्तरप्रदेश के जिला सहारनपुर के [...]

[Full Story >>>](#)

### चाची की चूत का स्वाद चखा- 1

देसी चाची का नंगा बदन तब देखा जब मैं चाची के घर गया और चाची आंगन में बैठ कर नहा रही थी. चाची का नंगा बदन भीगा हुआ था। जिसे देखकर मेरा लंड खड़ा हो गया. मैं रोहित ... चूत [...]

[Full Story >>>](#)

### गांड मरवाने की तमन्ना पूरी हुई- 2

Xxx गे की चुदाई कहानी में मैंने अपने यार से दूसरी बार गांड मरवाने का मजा लिया. उसने बिना तेल लगाये मेरी सूखी गांड में लंड घुसाया तो मेरी गांड फट गयी. मैं आपकी तमन्ना एक बार फिर से अपने [...]

[Full Story >>>](#)

### ठरकी डॉक्टर को मिली सिमरन की गांड

ऐस लिक BDSM कहानी में मैं अपनी दोस्त के साथ अस्पताल गई तो वहां एक डॉक्टर ने मेरी गांड पर हाथ फेर दिया। मैंने उसको कैसे सबक सिखाया ? दोस्तो, मैं सिमरन एक और कहानी लेकर आई हूँ। आज जो मैं [...]

[Full Story >>>](#)

### दोस्त के पापा ने मेरी बहन चोद दी- 2

Xxx अंकल सेक्स कहानी में पढ़ें कि कैसे मेरे पड़ोसी अंकल ने मेरी बुआ की जवान बेटी, जो हमारे घर आती थी, को पता कर उसकी बुर की सील तोड़ कर चोदा. दोस्तो, मैं निशांत आपको अपनी कहानी के पहले [...]

[Full Story >>>](#)

